رَبَّكَ فِیْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِیْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ

को अपने दिल में याद करो[390] ज़ारी (आ़जिज़ी) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुब्ह

وَ الْاٰصَالِ وَ لَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِیْنَ ﴿۲۰۵﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا

और शाम[391] और ग़ाफ़िलों में न होना बेशक वोह जो तेरे रब के पास हैं[392]

یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ یُسَبِّحُوْنَهٗ وَ لَهٗ یَسْجُدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾ السجدة

उस की इ़बादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की पाकी बोलते और उसी को सज्दा करते हैं[393]

ایاتها ٧٥ — ٨ سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِیَّةٌ ٨٨ — رکوعاتها ١٠

सूरए अन्फ़ाल मदनिय्या है, इस में पछत्तर आयतें और दस रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ

ऐ मह़बूब तुम से ग़नीमतों को पूछते हैं[2] तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक **अल्लाह** व रसूल हैं[3] तो **अल्लाह** से डरो[4] और

ए'तिमाद जिस ह़दीस पर किया जाता है वोह येह है : "لَا صَلٰوةَ اِلَّا بِفَاتِحَةِ الْکِتَاب" मगर इस ह़दीस से क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम का वुजूब तो साबित नहीं होता सिर्फ़ इतना साबित होता है कि बिग़ैर फ़ातिह़ा के नमाज़ कामिल नहीं होती तो जब कि ह़दीस : "قِرَاءَةُ الْاِمَامِ لَهٗ قِرَاءَةٌ" से साबित है कि इमाम का क़िराअत करना ही मुक़्तदी का क़िराअत करना है तो जब इमाम ने क़िराअत की और मुक़्तदी साकित रहा तो उस की क़िराअत हुक्मिया हुई उस की नमाज़ बे क़िराअत कहां रही, येह क़िराअत हुक्मिया है तो इमाम के पीछे क़िराअत न करने से क़ुरआन व ह़दीस दोनों पर अ़मल हो जाता है और क़िराअत करने से आयत का इत्तिबाअ़ तर्क होता है, लिहाज़ा ज़रूरी है कि इमाम के पीछे फ़ातिह़ा वग़ैरा कुछ न पढ़े। **390 :** ऊपर की आयत के बा'द इस आयत के देखने से मा'लूम होता है कि क़ुरआन शरीफ़ सुनने वाले को ख़ामोश रहना और बे आवाज़ निकाले दिल में ज़िक्र करना या'नी अ़ज़्मतो जलाले इलाही का इस्तिह़्ज़ार (मौजूद होना) लाज़िम है كَذَا فِیْ تَفْسِیْرِ ابْنِ جَرِیْر। इस से इमाम के पीछे बुलन्द या पस्त आवाज़ से क़िराअत की मुमानअ़त साबित होती है और दिल में अ़ज़्मतो जलाले ह़क़ का इस्तिह़्ज़ार ज़िक्रे क़ल्बी है। **मस्अला :** ज़िक्र बिल जहर और ज़िक्र बिल इख़्फ़ा दोनों में नुसूस वारिद हैं जिस शख़्स को जिस क़िस्म के ज़िक्र में ज़ौक़ो शौक़े ताम व इख़्लासे कामिल मुयस्सर हो उस के लिये वोही अफ़्ज़ल है, کذا فی رد المحتار वग़ैरा। **391 :** शाम अ़स्र व मग़रिब के दरमियान का वक़्त है, इन दोनों वक़्तों में ज़िक्र अफ़्ज़ल है क्यूं कि नमाज़े फ़ज्र के बा'द तुलूए आफ़्ताब तक और इसी त़रह़ नमाज़े अ़स्र के बा'द ग़ुरूबे आफ़्ताब तक नमाज़ मम्नूअ़ है इस लिये इन वक़्तों में ज़िक्र मुस्तह़ब हुवा ताकि बन्दे के तमाम अवक़ात क़ुरबत व त़ाअ़त में मश्ग़ूल रहें। **392 :** या'नी मलाइकए मुक़र्रबीन **393 :** येह आयत आयाते सज्दा में से है, इन के पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सज्दा लाज़िम हो जाता है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : जब आदमी आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है तो शैत़ान रोता है और कहता है अफ़्सोस बनी आदम को सज्दे का हुक्म दिया गया वोह सज्दा कर के जन्नती हुवा और मुझे सज्दे का हुक्म दिया गया तो मैं इन्कार कर के जहन्नमी हो गया। **1 :** येह सूरत मदनी है बजुज़ सात आयतों के जो मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुईं और "اِذْ یَمْکُرُ بِکَ الَّذِیْنَ" से शुरूअ़ होती हैं, इस में पछत्तर आयतें और एक हज़ार पछत्तर कलिमे और पांच हज़ार अस्सी ह़ुरूफ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : उन्हों ने फ़रमाया कि येह आयत हम अहले बद्र के ह़क़ में नाज़िल हुई जब ग़नीमत के मुआ़मले में हमारे दरमियान इख़्तिलाफ़ पैदा हुवा और बद मज़गी की नौबत आ गई तो **अल्लाह** तआ़ला ने मुआ़मला हमारे हाथ से निकाल कर अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के सिपुर्द किया। आप ने वोह माल बराबर तक़्सीम कर दिया। **3 :** जैसे चाहें तक़्सीम फ़रमाएं। **4 :** और बाहम इख़्तिलाफ़ न करो।

اَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١﴾

अपने आपस में मेल (सुल्ह सफ़ाई) रखो और **अल्लाह** व रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِيَتْ

ईमान वाले वोही हैं कि जब **अल्लाह** याद किया जाए[5] उन के दिल डर जाएं और जब उन पर

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّ عَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۚۖ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ

उस की आयतें पढ़ी जाएं उन का ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें[6] वोह जो नमाज़ क़ाइम

الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ؕ ﴿٣﴾ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ

रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें येही सच्चे मुसल्मान हैं इन के लिये

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ مَغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ۚ ﴿٤﴾ كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ

दरजे हैं इन के रब के पास[7] और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[8] जिस त़रह़ ऐ मह़बूब तुम्हें तुम्हारे रब ने

مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَ اِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۙ ﴿٥﴾

तुम्हारे घर से ह़क़ के साथ बरआमद किया[9] और बेशक मुसल्मानों का एक गुरौह इस पर नाख़ुश था[10]

5 : तो उस के अ़ज़्मतो जलाल से **6 :** और अपने तमाम कामों को उस के सिपुर्द करें। **7 :** ब क़दर उन के आ'माल के क्यूं कि मोमिनीन के अह़वाल इन औसाफ़ में मुतफ़ावित हैं इस लिये उन के मरातिब भी जुदागाना हैं। **8 :** जो हमेशा इक्राम व ता'ज़ीम के साथ बे मेह़नतो मशक़्क़त अ़त़ा की जाए। **9 :** या'नी मदीनए त़य्यिबा से बद्र की त़रफ़। **10 :** क्यूं कि वोह देख रहे थे कि उन की ता'दाद कम है, हथियार थोड़े हैं, दुश्मन की ता'दाद भी ज़ियादा है और वोह अस्लह़ा वग़ैरा का बड़ा सामान रखता है। मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि अबू सुफ़्यान के मुल्के शाम से एक क़ाफ़िले के साथ आने की ख़बर पा कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ उन के मुक़ाबले के लिये रवाना हुए मक्कए मुकर्रमा से अबू जह्ल क़ुरैश का एक लश्करे गिरां ले कर क़ाफ़िले की इमदाद के लिये रवाना हुवा। अबू सुफ़्यान तो रस्ते से कतरा कर मअ़ अपने क़ाफ़िले के साहिले बह़्र की राह चल पड़े और अबू जह्ल से उस के रफ़ीक़ों ने कहा कि क़ाफ़िला तो बच गया अब मक्कए मुकर्रमा वापस चल, तो उस ने इन्कार कर दिया और वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जंग करने के क़स्द से बद्र की त़रफ़ चल पड़ा। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया और फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि **अल्लाह** तआ़ला कुफ़्फ़ार के दोनों गुरौहों में से एक पर मुसल्मानों को फ़त्ह़ मन्द करेगा ख़्वाह क़ाफ़िला हो या क़ुरैश का लश्कर। सह़ाबा ने इस में मुवाफ़क़त की मगर बा'ज़ को येह उ़ज़्र हुवा कि हम इस तय्यारी से नहीं चले थे और न हमारी ता'दाद इतनी है न हमारे पास काफ़ी सामाने अस्लह़ा है, येह रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को गिरां गुज़रा और ह़ुज़ूर ने फ़रमाया कि क़ाफ़िला तो साह़िल की त़रफ़ निकल गया और अबू जह्ल सामने आ रहा है। इस पर उन लोगों ने फिर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! क़ाफ़िले ही का तआ़क़ुब कीजिये और लश्करे दुश्मन को छोड़ दीजिये। येह बात ना गवार ख़ात़िरे अक़्दस हुई तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर व ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने खड़े हो कर अपने इख़्लास व फ़रमां बरदारी और रिज़ाजूई व जां निसारी का इज़्हार किया और बड़ी क़ुव्वत व इस्तिह़्काम के साथ अ़र्ज़ की, कि वोह किसी त़रह़ मरज़िये मुबारक के ख़िलाफ़ सुस्ती करने वाले नहीं हैं फिर और सह़ाबा ने भी अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** ने ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को जो अम्र फ़रमाया उस के मुत़ाबिक़ तशरीफ़ ले चलें, हम साथ हैं, कभी तख़ल्लुफ़ न करें (पीछे न रहें)गे, हम आप पर ईमान लाए, हम ने आप की तस्दीक़ की, हम ने आप के इत्तिबाअ़ के अ़ह्द किये, हमें आप की इत्तिबाअ़ में समुन्दर के अन्दर कूद जाने से भी उ़ज़्र नहीं है। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : चलो **अल्लाह** की बरकत पर भरोसा करो, उस ने मुझे वा'दा दिया है, मैं तुम्हें बिशारत देता हूं, मुझे दुश्मनों के गिरने की जगह नज़र आ रही है और ह़ुज़ूर ने कुफ़्फ़ार के मरने और गिरने की जगह नाम बनाम बता दीं और एक एक की जगह पर निशानात लगा दिये और येह मो'जिज़ा देखा गया कि उन में से जो मर कर गिरा उसी निशान पर गिरा, उस से ख़त़ा न की।

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ

सच्ची बात में तुम से झगड़ते थे[11] बा'द इस के कि ज़ाहिर हो चुकी[12] गोया वोह आंखों देखी मौत की त़रफ़

يَنْظُرُوْنَ ؕ ﴿۶﴾ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ

हांके जाते हैं[13] और याद करो जब **अल्लाह** ने तुम्हें वा'दा दिया था कि इन दोनों गुरौहों[14] में एक तुम्हारे लिये है और तुम येह चाहते थे

اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ

कि तुम्हें वोह मिले जिस में कांटे का खटका (किसी नुक़्सान का डर) नहीं[15] और **अल्लाह** येह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए[16]

وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ ﴿۷﴾ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ

और काफ़िरों की जड़ काट दे (हलाक कर दे)[17] कि सच को सच करे और झूट को झूटा[18] पड़े बुरा

الْمُجْرِمُوْنَ ۚ ﴿۸﴾ اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ

मानें मुजरिम जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे[19] तो उस ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूं हज़ार

مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿۹﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَىِٕنَّ بِهٖ

फ़िरिश्तों की क़ित़ार से[20] और येह तो **अल्लाह** ने न किया मगर तुम्हारी ख़ुशी को और इस लिये कि तुम्हारे दिल

ع ۱۵ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰﴾ ع اِذْ

चैन पाएं और मदद नहीं मगर **अल्लाह** की त़रफ़ से[21] बेशक **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है जब

11 : और कहते थे कि हमें लश्करे क़ुरैश का ह़ाल ही मा'लूम न था कि हम उन के मुक़ाबले की तय्यारी कर के चलते। **12 :** येह बात कि ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم जो कुछ करते हैं हुक्मे इलाही से करते हैं और आप ने ए'लान फ़रमा दिया है कि मुसल्मानों को ग़ैबी मदद पहुंचेगी। **13 :** या'नी क़ुरैश से मुक़ाबला उन्हें ऐसा मुहीब (बड़ा भयानक) मा'लूम होता है। **14 :** या'नी अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले और अबू जह्ल के लश्कर। **15 :** या'नी अबू सुफ़्यान का क़ाफ़िला **16 :** दीने ह़क़ को ग़लबा दे, इस को बुलन्दो बाला करे। **17 :** और उन्हें इस त़रह़ हलाक करे कि उन में से कोई बाक़ी न बचे। **18 :** या'नी इस्लाम को ज़ुहूरो सबात अ़त़ा फ़रमाए और कुफ़्र को मिटाए। **19 शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है रोज़े बद्र रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुश्रिकीन को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि हज़ार हैं और आप के अस्ह़ाब तीन सो दस से कुछ ज़ियादा तो ह़ुज़ूर क़िब्ले की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और अपने मुबारक हाथ फैला कर अपने रब से येह दुआ़ करने लगे या रब ! जो तू ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है पूरा कर, या रब ! जो तू ने मुझ से वा'दा किया इनायत फ़रमा, या रब ! अगर तू अहले इस्लाम की इस जमाअ़त को हलाक कर देगा तो ज़मीन में तेरी परस्तिश न होगी। इसी त़रह़ ह़ुज़ूर दुआ़ करते रहे यहां तक कि दोशे (शानए) मुबारक से चादर शरीफ़ उतर गई तो ह़ज़रते अबू बक्र ह़ाज़िर हुए और चादरे मुबारक दोशे अक़्दस पर डाली और अ़र्ज़ किया : **या नबिय्यल्लाह !** आप की मुनाजात अपने रब के साथ काफ़ी हो गई, वोह बहुत जल्द अपना वा'दा पूरा फ़रमाएगा, इस पर येह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। **20 :** चुनान्चे अव्वल हज़ार फ़िरिश्ते आए फिर तीन हज़ार फिर पांच हज़ार, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुसल्मान उस रोज़ काफ़िरों का तआ़क़ुब करते थे और काफ़िर मुसल्मान के आगे आगे भागता जाता था अचानक ऊपर से कोड़े की आवाज़ आती थी और सुवार का येह कलिमा सुना जाता था : (اَقْدِمْ حَيْزُوْمُ) या'नी आगे बढ़ ऐ ह़ैज़ूम ! (ह़ैज़ूम ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े का नाम है) और नज़र आता था कि काफ़िर गिर कर मर गया और उस की नाक तलवार से उड़ा दी गई और चेहरा ज़ख़्मी हो गया। सह़ाबा ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अपने येह मुआ़यने बयान किये तो ह़ुज़ूर ने फ़रमाया कि येह आस्माने सिवुम की मदद है। अबू जह्ल ने ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه से कहा कि कहां से ज़र्ब आती थी ? मारने वाला तो हम को नज़र नहीं आता था। आप ने फ़रमाया : फ़िरिश्तों की त़रफ़ से, तो कहने लगा : फिर वोही तो ग़ालिब हुए तुम तो ग़ालिब नहीं हुए। **21 :** तो बन्दे को चाहिये कि उसी पर भरोसा करे और अपने ज़ोर व क़ुव्वत और अस्बाब व

www.dawateislami.net

يُغَشِّيۡكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنۡهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيۡكُمۡ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً

उस ने तुम्हें ऊंघ से घेर दिया तो उस की त़रफ़ से चैन (तस्कीन) थी[22] और आस्मान से तुम पर पानी उतारा

لِّيُطَهِّرَكُمۡ بِهٖ وَيُذۡهِبَ عَنۡكُمۡ رِجۡزَ الشَّيۡطٰنِ وَلِيَرۡبِطَ عَلٰى قُلُوۡبِكُمۡ وَ

कि तुम्हें उस से सुथरा कर दे और शैत़ान की नापाकी तुम से दूर फ़रमा दे और तुम्हारे दिलों की ढारस बंधाए और

يُثَبِّتَ بِهِ الۡاَقۡدَامَ ؕ ﴿۱۱﴾ اِذۡ يُوۡحِىۡ رَبُّكَ اِلَى الۡمَلٰٓـئِكَةِ اَنِّىۡ مَعَكُمۡ فَثَبِّتُوا

उस से तुम्हारे क़दम जमा दे[23] जब ऐ मह़बूब तुम्हारा रब फ़िरिश्तों को वह़्य भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं तुम मुसल्मानों

الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ؕ سَاُلۡقِىۡ فِىۡ قُلُوۡبِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوا الرُّعۡبَ فَاضۡرِبُوۡا

को साबित रखो[24] अ़न्क़रीब मैं काफ़िरों के दिलों में हैबत डालूंगा तो काफ़िरों

فَوۡقَ الۡاَعۡنَاقِ وَاضۡرِبُوۡا مِنۡهُمۡ كُلَّ بَنَانٍ ؕ ﴿۱۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ شَآقُّوا

की गरदनों से ऊपर मारो और उन की एक एक पोर (जोड़) पर ज़र्ब लगाओ[25] येह इस लिये कि उन्हों ने अल्लाह और

اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ ۚ وَمَنۡ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ

उस के रसूल से मुख़ालफ़त की और जो अल्लाह और उस के रसूल से मुख़ालफ़त करे तो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब

जमाअ़त पर नाज़ न करे। **22 :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि ग़ुनूदगी अगर जंग में हो तो अम्न है और अल्लाह की त़रफ़ से है और नमाज़ में हो तो शैत़ान की त़रफ़ से है, जंग में ग़ुनूदगी का अम्न होना इस से ज़ाहिर है कि जिसे जान का अन्देशा हो उसे नींद और ऊंघ नहीं आती वोह ख़त़रे और इज़्त़िराब में रहता है। ख़ौफ़े शदीद के वक़्त ग़ुनूदगी आना ह़ुसूले अम्न और ज़वाले ख़ौफ़ की दलील है बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि जब मुसल्मानों को दुश्मनों की कसरत और मुसल्मानों की क़िल्लत से जानों का ख़ौफ़ हुवा और बहुत ज़ियादा प्यास लगी तो उन पर ग़ुनूदगी डाल दी गई जिस से उन्हें राह़त ह़ासिल हुई और तकान और प्यास रफ़्अ़ हुई और वोह दुश्मन से जंग करने पर क़ादिर हुए। येह ऊंघ उन के ह़क़ में ने'मत थी और यकबारगी सब को आई, जमाअ़ते कसीर का ख़ौफ़े शदीद की ह़ालत में इस त़रह़ यकबारगी ऊंघ जाना ख़िलाफ़े आ़दत है इसी लिये बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : येह ऊंघ मो'जिज़े के हुक्म में है। (خازن) **23 :** रोज़े बद्र मुसल्मान रेगिस्तान में उतरे उन के और उन के जानवरों के पाउं रैत में धंसे जाते थे और मुश्रिकीन इन से पहले लबे आब क़ब्ज़ा कर चुके थे। सह़ाबा में बा'ज़ ह़ज़रात को वुज़ू की बा'ज़ को ग़ुस्ल की ज़रूरत थी और प्यास की शिद्दत थी तो शैत़ान ने वस्वसा डाला कि तुम गुमान करते हो कि तुम ह़क़ पर हो तुम में अल्लाह के नबी हैं और तुम अल्लाह वाले हो और ह़ाल येह है कि मुश्रिकीन ग़ालिब हो कर पानी पर पहुंच गए तुम बिग़ैर वुज़ू और ग़ुस्ल किये नमाज़ें पढ़ते हो तो तुम्हें दुश्मन पर फ़त्ह़ याब होने की किस त़रह़ उम्मीद है तो अल्लाह तआ़ला ने मींह भेजा जिस से जंगल सैराब हो गया और मुसल्मानों ने उस से पानी पिया और ग़ुस्ल किये और वुज़ू किये और अपनी सुवारियों को पिलाया और अपने बरतनों को भरा और ग़ुबार बैठ गया और ज़मीन इस क़ाबिल हो गई कि उस पर क़दम जमने लगे और शैत़ान का वस्वसा ज़ाइल हुवा और सह़ाबा के दिल ख़ुश हुए और येह ने'मते फ़त्ह़ो ज़फ़र ह़ासिल होने की दलील हुई। **24 :** इन की इआ़नत कर के और इन्हें बिशारत दे कर **25 :** अबू दावूद माज़िनी जो बद्र में ह़ाज़िर हुए थे फ़रमाते हैं कि मैं मुश्रिक की गरदन मारने के लिये उस के दरपै हुवा, उस का सर मेरी तलवार पहुंचने से पहले ही कट कर गिर गया तो मैं ने जान लिया कि इस को किसी और ने क़त्ल किया। सह्ल बिन ह़ुनैफ़ फ़रमाते हैं कि रोज़े बद्र हम में से कोई तलवार से इशारा करता था तो उस की तलवार पहुंचने से पहले ही मुश्रिक का सर जिस्म से जुदा हो कर गिर जाता था। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने यकमुश्त संगरेज़े कुफ़्फ़ार पर फेंक कर मारे तो कोई काफ़िर ऐसा न बचा जिस की आंखों में उस में से कुछ पड़ा न हो। बद्र का येह वाक़िआ़ सुब्ह़े जुमुआ़ सतरह रमज़ान मुबारक 2 सिने हिजरी में पेश आया।

www.dawateislami.net

الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَ اَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يٰۤاَيُّهَا

सख़्त है   येह तो चखो[26] और इस के साथ येह है कि काफ़िरों को आग का अ़ज़ाब है[27]   ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾ ج

ईमान वालो जब काफ़िरों के लाम (लश्कर) से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन्हें पीठ न दो[28]

وَ مَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىٕذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ

और जो उस दिन उन्हें पीठ देगा मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअ़त में जा मिलने को

فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾ فَلَمْ

तो वोह **अल्लाह** के ग़ज़ब में पलटा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है   और क्या बुरी जगह है पलटने की[29]   तो तुम

تَقْتُلُوْهُمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَ مَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ

ने उन्हें क़त्ल न किया बल्कि **अल्लाह** ने[30] उन्हें क़त्ल किया   और ऐ महबूब वोह ख़ाक जो तुम ने फेंकी तुम ने न फेंकी बल्कि **अल्लाह** ने

رَمٰى ۚ وَ لِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾

फेंकी   और इस लिये कि मुसल्मानों को इस से अच्छा इन्आ़म अ़ता फ़रमाए   बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है

ذٰلِكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ

येह[31] तो लो और इस के साथ येह है कि **अल्लाह** काफ़िरों का दाउं सुस्त करने वाला है   ऐ काफ़िरो अगर तुम फ़ैसला मांगते हो तो येह फ़ैसला

الْفَتْحُ ۚ وَ اِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ اِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَ لَنْ تُغْنِيَ

तुम पर आ चुका[32]   और अगर बाज़ आओ[33] तो तुम्हारा भला है   और अगर तुम फिर शरारत करो तो हम फिर सज़ा देंगे   और तुम्हारा जथ्था (गुरोह)

26 : जो बद्र में पेश आया और कुफ़्फ़ार मक़्तूल और मुक़य्यद (क़ैद) हुए येह तो अ़ज़ाबे दुन्या है। **27 :** आख़िरत में **28 :** या'नी अगर कुफ़्फ़ार तुम से ज़ियादा भी हों तो उन के मुक़ाबले से न भागो। **29 :** या'नी मुसल्मानों में से जो जंग में कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागा वोह ग़ज़बे इलाही में गिरिफ़्तार हुवा, उस का ठिकाना दोज़ख़ है, सिवाए दो ह़ालतों के : **एक** तो येह कि लड़ाई का हुनर या करतब करने के लिये पीछे हटा हो वोह पीठ देने और भागने वाला नहीं है। **दूसरे** जो अपनी जमाअ़त में मिलने के लिये पीछे हटा वोह भी भागने वाला नहीं है। **30 शाने नुज़ूल :** जब मुसल्मान जंगे बद्र से वापस हुए तो उन में से एक कहता था कि मैं ने फ़ुलां को क़त्ल किया, दूसरा कहता था कि मैं ने फ़ुलां को क़त्ल किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि इस क़त्ल को तुम अपने ज़ोर व क़ुव्वत की त़रफ़ निस्बत न करो कि येह दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** की इमदाद और उस की तक़्विय्यत और ताईद है। **31 :** फ़त्ह़ो नुसरत **32 शाने नुज़ूल :** येह ख़ित़ाब मुश्रिकीन को है जिन्हों ने बद्र में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जंग की और उन में से अबू जहल ने अपनी और हुज़ूर की निस्बत येह दुआ़ की, कि या रब ! हम में जो तेरे नज़्दीक अच्छा हो उस की मदद कर और जो बुरा हो उसे मुब्तलाए मुसीबत कर और एक रिवायत में है कि मुश्रिकीन ने मक्कए मुकर्रमा से बद्र को चलते वक़्त का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पर्दों से लिपट कर येह दुआ़ की थी कि या रब ! अगर मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) ह़क़ पर हों तो उन की मदद फ़रमा और अगर हम ह़क़ पर हों तो हमारी मदद कर, इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि जो फ़ैसला तुम ने चाहा था वोह कर दिया गया और जो गुरोह ह़क़ पर था उस को फ़त्ह़ दी गई, येह तुम्हारा मांगा हुवा फ़ैसला है, अब आस्मानी फ़ैसले से भी जो उन का त़लब किया हुवा था इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत साबित हुई। अबू जहल भी इस जंग में ज़िल्लत और रुस्वाई के साथ मारा गया और उस का सर रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में ह़ाज़िर किया गया। **33 :** सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़दावत और हुज़ूर

عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾ ع يٰۤاَيُّهَا ع ٢/٩/١٢

तुम्हें कुछ काम न देगा चाहे कितना ही बहुत हो और इस के साथ येह है कि अल्लाह मुसल्मानों के साथ है ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾ ۚۖ

ईमान वालो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो[34] और सुन सुना कर उस से न फिरो

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ شَرَّ

और उन जैसे न होना जिन्हों ने कहा हम ने सुना और वोह नहीं सुनते[35] बेशक सब जानवरों

الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ

में बदतर अल्लाह के नज़्दीक वोह हैं जो बहरे गूंगे हैं जिन को अ़क़्ल नहीं[36] और अगर अल्लाह उन में

اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

कुछ भलाई[37] जानता तो उन्हें सुना देता और अगर[38] सुना देता जब भी अन्जाम कार मुंह फेर कर पलट जाते[39]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ

ऐ ईमान वालो अल्लाह व रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो[40] जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी[41]

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

और जान लो कि अल्लाह का हुक्म आदमी और उस के दिली इरादों में हाइल हो जाता है और येह कि तुम्हें उसी की त़रफ़ उठना है

के साथ जंग करने से **34 :** क्यूं कि रसूल की इत़ाअ़त और अल्लाह की इत़ाअ़त एक ही चीज़ है, जिस ने रसूल की इत़ाअ़त की उस ने अल्लाह की इत़ाअ़त की। **35 :** क्यूं कि जो सुन कर नफ़्अ़ न उठाए और नसीह़त पज़ीर न हो उस का सुनना सुनना ही नहीं है, येह मुनाफ़िक़ीन व मुश्रिकीन का ह़ाल है, मुसल्मानों को इस ह़ाल से दूर रहने का हुक्म दिया जाता है। **36 :** न वोह ह़क़ सुनते हैं, न ह़क़ बोलते हैं, न ह़क़ को समझते हैं, कान और ज़बान व अ़क़्ल से फ़ाएदा नहीं उठाते, जानवरों से भी बदतर हैं क्यूं कि येह दीदा दानिस्ता बहरे गूंगे बनते हैं और अ़क़्ल से दुश्मनी करते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत बनी अ़ब्दुद्दार बिन क़ुसय के ह़क़ में नाज़िल हुई जो कहते थे कि जो कुछ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ लाए हम उस से बहरे, गूंगे, अन्धे हैं। येह सब लोग जंगे उहुद में मक़्तूल हुए और उन में से सिर्फ़ दो शख़्स ईमान लाए : मुस्अ़ब बिन उ़मैर और सुवैबित़ बिन ह़र्मला। **37 :** या'नी सिद्क़ो रग़्बत **38 :** ब ह़ालते मौजूदा येह जानते हुए कि उन में सिद्क़ो रग़्बत नहीं है **39 :** अपने इनाद (बुग़्ज़) और ह़क़ से दुश्मनी के बाइस **40 :** क्यूं कि रसूल का बुलाना अल्लाह ही का बुलाना है। बुख़ारी शरीफ़ में सईद बिन मुअ़ल्ला से मरवी है फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था, मुझे रसूले अकरम ﷺ ने पुकारा मैं ने जवाब न दिया फिर मैं ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** मैं नमाज़ पढ़ रहा था, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि क्या अल्लाह तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया है कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो ? ऐसा ही दूसरी ह़दीस में है कि ह़ज़रते उबय बिन का'ब नमाज़ पढ़ते थे, हुज़ूर ने उन्हें पुकारा, उन्हों ने जल्दी नमाज़ तमाम कर के सलाम अ़र्ज़ किया, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम्हें जवाब देने से क्या बात मानेअ़ हुई ? अ़र्ज़ किया : हुज़ूर मैं नमाज़ में था। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम ने क़ुरआने पाक में येह नहीं पाया कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो ? अ़र्ज़ किया : बेशक आयिन्दा ऐसा न होगा। **41 :** उस चीज़ से या ईमान मुराद है क्यूं कि काफ़िर मुर्दा होता है, ईमान से उस को ज़िन्दगी ह़ासिल होती है। क़तादा ने कहा कि वोह चीज़ क़ुरआन है क्यूं कि इस से दिलों की ज़िन्दगी है और इस में नजात है और इ़स्मते दारैन है। मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि वोह चीज़ जिहाद है क्यूं कि इस की बदौलत अल्लाह तआ़ला ज़िल्लत के बा'द इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाता

www.dawateislami.net

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا

और उस फ़ितने से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ास ज़ालिमों ही को न पहुंचेगा[42] और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ

कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है और याद करो[43] जब तुम थोड़े थे मुल्क में

فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ

दबे हुए[44] डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक न ले जाएं तो उस ने तुम्हें[45] जगह दी और अपनी मदद से ज़ोर दिया

وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا

और सुथरी चीज़ें तुम्हें रोज़ी दीं[46] कि कहीं तुम एहसान मानो ऐ ईमान वालो अल्लाह

تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَ

व रसूल से दग़ा न करो[47] और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़ियानत और

है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि वोह शहादत है इस लिये कि शुहदा अपने रब के नज़्दीक ज़िन्दा हैं। **42 :** बल्कि अगर तुम उस से न डरे और उस के अस्बाब या'नी मम्नूआत को तर्क न किया और फ़ितना नाज़िल हुवा तो येह न होगा कि उस में ख़ास ज़ालिम और बदकार ही मुब्तला हों बल्कि वोह नेक और बद सब को पहुंच जाएगा। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मोमिनीन को हुक्म फ़रमाया कि वोह अपने दरमियान मम्नूआत न होने दें या'नी अपने मक़्दूर (ताक़त) तक बुराइयों को रोकें और गुनाह करने वालों को गुनाह से मन्अ करें, अगर उन्हों ने ऐसा न किया तो अज़ाब उन सब को आम होगा, ख़ताकार और ग़ैर ख़ताकार सब को पहुंचेगा। हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला मख़्सूस लोगों के अमल पर अज़ाब आम नहीं करता जब तक कि आम तौर पर लोग ऐसा न करें कि मम्नूआत को अपने दरमियान होता देखते रहें और उस के रोकने और मन्अ करने पर क़ादिर हों बा वुजूद इस के न रोकें न मन्अ करें, जब ऐसा होता है तो अल्लाह तआला अज़ाब में आम व ख़ास सब को मुब्तला करता है। अबू दावूद की हदीस में है कि जो शख़्स किसी क़ौम में सरगर्मे मआसी हो और वोह लोग बा वुजूद क़ुदरत के उस को न रोकें तो अल्लाह तआला मरने से पहले उन्हें अज़ाब में मुब्तला करता है। इस से मा'लूम हुवा कि जो क़ौम नही अनिल मुन्कर तर्क करती है और लोगों को गुनाहों से नहीं रोकती वोह अपने इस तर्के फ़र्ज़ की शामत में मुब्तलाए अज़ाब होती है। **43 :** ऐ मोमिनीने मुहाजिरीन ! इब्तिदाए इस्लाम में हिजरत करने से पहले मक्कए मुकर्रमा में **44 :** क़ुरैश तुम पर ग़ालिब थे और तुम **45 :** मदीनए तय्यिबा में **46 :** या'नी अम्वाले ग़नीमत जो तुम से पहले किसी उम्मत के लिय हलाल नहीं किये गए थे। **47 :** फ़राइज़ का छोड़ देना अल्लाह तआला से ख़ियानत करना है और सुन्नत का तर्क करना रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू लुबाबा हारून बिन अब्दुल मुन्ज़िर अन्सारी के हक़ में नाज़िल हुई। वाक़िआ येह था कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने यहूदे बनी क़ुरैज़ा का दो हफ़्ते से ज़ियादा अर्से तक मुहासरा फ़रमाया वोह इस मुहासरे से तंग आ गए और उन के दिल ख़ाइफ़ हो गए तो उन से उन के सरदार का'ब बिन असद ने येह कहा कि अब तीन शक्लें (सूरतें) हैं या इस शख़्स या'नी सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्दीक़ करो और इन की बैअत कर लो क्यूं कि क़सम ब ख़ुदा वोह नबिय्ये मुरसल हैं, येह ज़ाहिर हो चुका और येह वोही रसूल हैं जिन का ज़िक्र तुम्हारी किताब में है, इन पर ईमान ले आए तो जान, माल, अहलो औलाद सब महफ़ूज़ रहेंगे, मगर इस बात को क़ौम ने न माना तो का'ब ने दूसरी शक्ल (सूरत) पेश की और कहा कि तुम अगर इसे नहीं मानते तो आओ पहले हम अपने बीबी बच्चों को क़त्ल कर दें फिर तलवारें खींच कर मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन के अस्हाब के मुक़ाबिल आएं कि अगर हम इस मुक़ाबले में हलाक भी हो जाएं तो हमारे साथ अपने अहलो औलाद का ग़म तो न रहे। इस पर क़ौम ने कहा कि अहलो औलाद के बा'द जीना ही किस काम का ? तो का'ब ने कहा कि येह भी मन्ज़ूर नहीं है तो सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से सुल्ह की दरख़्वास्त करो शायद इस में कोई बेहतरी की सूरत निकले, तो उन्हों ने हुज़ूर से सुल्ह की दरख़्वास्त की लेकिन हुज़ूर ने मन्ज़ूर न फ़रमाया सिवाए इस के कि अपने हक़ में सा'द बिन मुआज़ के फ़ैसले को मन्ज़ूर करें, इस पर उन्हों ने कहा कि हमारे पास अबू लुबाबा को भेज दीजिये क्यूं कि अबू लुबाबा से उन के तअल्लुक़ात थे और अबू लुबाबा का माल और उन की औलाद और उन के इयाल सब बनी क़ुरैज़ा के पास थे। हुज़ूर ने अबू लुबाबा को भेज दिया बनी क़ुरैज़ा ने उन से राय दरयाफ़्त की, कि क्या हम सा'द बिन मुआज़ का फ़ैसला मन्ज़ूर कर लें कि जो कुछ वोह हमारे हक़ में फ़ैसला दें वोह हमें

www.dawateislami.net

اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ﴿۲۸﴾ ع ١٧

जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फ़ितना है[48] और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है[49]

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ یَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّ یُكَفِّرْ

ऐ ईमान वालो अगर अल्लाह से डरोगे[50] तो तुम्हें वोह देगा जिस से हक़ को बातिल से जुदा कर लो और तुम्हारी

عَنْكُمْ سَیِّاٰتِكُمْ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ ﴿۲۹﴾ وَ اِذْ یَمْكُرُ

बुराइयां उतार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है और ऐ महबूब याद करो जब काफ़िर

بِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِیُثْبِتُوْكَ اَوْ یَقْتُلُوْكَ اَوْ یُخْرِجُوْكَ ؕ وَ یَمْكُرُوْنَ

तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द (क़ैद) कर लें या शहीद कर दें या निकाल (जला वतन कर) दें[51] और वोह अपना सा मक्र करते थे

क़बूल हो ? अबू लुबाबा ने अपनी गरदन पर हाथ फेर कर इशारा किया कि येह तो गले कटवाने की बात है, अबू लुबाबा कहते हैं कि मेरे क़दम अपनी जगह से हटने न पाए थे कि मेरे दिल में येह बात जम गई कि मुझ से अल्लाह और उस के रसूल की ख़ियानत वाक़ेअ़ हुई, येह सोच कर वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में तो न आए सीधे मस्जिद शरीफ़ पहुंचे और मस्जिद शरीफ़ के एक सुतून से अपने आप को बंधवा लिया और अल्लाह की क़सम खाई कि न कुछ खाएंगे न पियेंगे यहां तक कि मर जाएं या अल्लाह तआ़ला उन की तौबा क़बूल करे। वक़्तन फ़ वक़्तन उन की बीबी आ कर उन्हें नमाज़ों के लिये और इन्सानी ह़ाजतों के लिये खोल दिया करती थीं और फिर बांध दिये जाते थे। हुज़ूर को जब येह ख़बर पहुंची तो फ़रमाया कि अबू लुबाबा मेरे पास आते तो मैं उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करता लेकिन जब उन्हों ने येह किया है तो मैं उन्हें न खोलूंगा जब तक अल्लाह उन की तौबा क़बूल न करे। वोह सात रोज़ बंधे रहे न कुछ खाया न पिया यहां तक कि बेहोश हो कर गिर गए, फिर अल्लाह तआ़ला ने उन की तौबा क़बूल की। सहाबा ने उन्हें तौबा क़बूल होने की बिशारत दी तो उन्हों ने कहा : मैं ख़ुदा की क़सम ! न खुलूंगा जब तक रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मुझे ख़ुद न खोलें। ह़ज़रत ने उन्हें अपने दस्ते मुबारक से खोल दिया। अबू लुबाबा ने कहा मेरी तौबा उस वक़्त पूरी होगी जब मैं अपनी क़ौम की बस्ती छोड़ दूं जिस में मुझ से येह ख़त़ा सरज़द हुई और मैं अपने कुल माल को अपने मिल्क से निकाल दूं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तिहाई माल का सदक़ा करना काफ़ी है। उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **48 :** कि आख़िरत के कामों में सद्दे राह (रुकावट) होता है। **49 :** तो आ़क़िल को चाहिये कि उसी का त़लब गार रहे और माल व औलाद के सबब से उस से महरूम न हो। **50 :** इस त़रह़ कि गुनाह तर्क करो और त़ाअ़त बजा लाओ। **51 :** इस में उस वाक़िए़ का बयान है जो ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने ज़िक्र फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश दारुन्नद्वा (कमेटी घर) में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत मश्वरा करने के लिये जम्अ़ हुए और इब्लीसे लईन एक बुढ्ढे की सूरत में आया और कहने लगा कि मैं शैख़े नज्द हूं मुझे तुम्हारे इस इज्तिमाअ़ की इत्तिलाअ़ हुई तो मैं आया, मुझ से तुम कुछ न छुपाना, मैं तुम्हारा रफ़ीक़ हूं और इस मुआ़मले में बेहतर राय से तुम्हारी मदद करूंगा, उन्हों ने इस को शामिल कर लिया और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ राय ज़नी शुरूअ़ हुई, अबुल बख़्तरी ने कहा कि मेरी राय येह है कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को पकड़ कर एक मकान में क़ैद कर दो और मज़बूत़ बन्दिशों से बांध दो दरवाज़ा बन्द कर दो सिर्फ़ एक सूराख़ छोड़ दो जिस से कभी कभी खाना पानी दिया जाए और वहीं वोह हलाक हो कर रह जाएं, इस पर शैत़ाने लईन जो शैख़े नज्दी बना हुवा था बहुत नाख़ुश हुवा और कहा निहायत नाक़िस राय है, येह ख़बर मश्हूर होगी और उन के अस्ह़ाब आएंगे और तुम से मुक़ाबला करेंगे और उन को तुम्हारे हाथ से छुड़ा लेंगे। लोगों ने कहा : शैख़े नज्दी ठीक कहता है। फिर हिशाम बिन अ़म्र खड़ा हुवा उस ने कहा मेरी राय येह है कि उन को (या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को ऊंट पर सुवार कर के अपने शहर से निकाल दो फिर वोह जो कुछ भी करें उस से तुम्हें कुछ ज़रर नहीं। इब्लीस ने इस राय को भी ना पसन्द किया और कहा : जिस शख़्स ने तुम्हारे होश उड़ा दिये और तुम्हारे दानिश मन्दों को ह़ैरान बना दिया उस को तुम दूसरों की त़रफ़ भेजते हो ! तुम ने उस की शीरीं कलामी, सैफ़े ज़बानी, दिलकशी नहीं देखी है ! अगर तुम ने ऐसा किया तो वोह दूसरी क़ौम के क़ुलूब तस्ख़ीर कर के उन लोगों के साथ तुम पर चढ़ाई करेंगे, अहले मज्मअ़ ने कहा : शैख़े नज्दी की राय ठीक है, इस पर अबू जहल खड़ा हुवा और उस ने येह राय दी कि क़ुरैश के हर हर ख़ानदान से एक एक आ़ली नसब जवान मुन्तख़ब किया जाए और उन को तेज़ तलवारें दी जाएं वोह सब यकबारगी ह़ज़रत पर ह़म्ला आवर हो कर क़त्ल कर दें तो बनी हाशिम क़ुरैश के तमाम क़बाइल से न लड़ सकेंगे। ग़ायत येह है कि ख़ून का मुआ़वज़ा देना पड़े वोह दे दिया जाएगा। इब्लीसे लईन ने इस तज्वीज़ को पसन्द किया और अबू जहल

www.dawateislami.net

وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۳۰﴾ وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا

और अल्लाह अपनी खुफ़्या तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की खुफ़्या तदबीर सब से बेहतर और जब उन पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो कहते हैं

قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَاۤ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ

हां हम ने सुना हम चाहते तो ऐसी हम भी कह देते येह तो नहीं मगर अगलों

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَ اِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ

के क़िस्से[52] और जब बोले[53] कि ऐ अल्लाह अगर येही (कुरआन) तेरी तरफ़ से हक़ है

فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۲﴾ وَمَا كَانَ

तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा या कोई दर्दनाक अज़ाब हम पर ला और अल्लाह का काम

اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَ اَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ

नहीं कि इन्हें अज़ाब करे जब तक ऐ महबूब तुम इन में तशरीफ़ फ़रमा हो[54] और अल्लाह उन्हें अज़ाब करने वाला नहीं जब तक वोह

की बहुत ता'रीफ़ की और इसी पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया। हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर वाक़िआ गुज़ारिश किया और अर्ज़ किया कि हुज़ूर अपनी ख़्वाब गाह में शब को न रहें, अल्लाह तआला ने इज़्न दिया है मदीनए तय्यिबा का अज़्म फ़रमाएं, हुज़ूर ने हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा को शब में अपनी ख़्वाब गाह में रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि हमारी चादर शरीफ़ ओढ़ो तुम्हें कोई ना गवार बात पेश न आएगी और हुज़ूर दौलत सराए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए और एक मुश्त ख़ाक दस्ते मुबारक में ली और आयत ''اِنَّا جَعَلْنَا فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا'' पढ़ कर मुहासरा करने वालों पर मारी सब की आंखों और सरों पर पहुंची सब अन्धे हो गए और हुज़ूर को न देख सके और हुज़ूर मअ़ अबू बक्र सिद्दीक़ के ग़ारे सौर में तशरीफ़ ले गए और हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा को लोगों की अमानतें पहुंचाने के लिये मक्कए मुकर्रमा छोड़ा मुश्रिकीन रात भर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की दौलत सराए का पहरा देते रहे, सुब्ह को जब क़त्ल के इरादे से हम्ला आवर हुए तो देखा कि हज़रते अली हैं उन से हुज़ूर को दरयाफ़्त किया कि कहां हैं उन्हों ने फ़रमाया कि हमें मा'लूम नहीं तो तलाश के लिये निकले, जब ग़ार पर पहुंचे तो मकड़ी के जाले देख कर कहने लगे कि अगर इस में दाख़िल होते तो येह जाले बाक़ी न रहते, हुज़ूर इस ग़ार में तीन रोज़ ठहरे फिर मदीनए तय्यिबा रवाना हुए। **52 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई जिस ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कुरआने पाक सुन कर कहा था कि हम चाहते तो हम भी ऐसी ही किताब कह लेते। अल्लाह तआला ने उन का येह मक़ूला नक़्ल किया कि इस में उन की कमाल बेशर्मी व बे हयाई है कि कुरआने पाक के तहद्दी फ़रमाने (ललकारने) और फ़ुसहाए अरब को कुरआने करीम के मिस्ल एक सूरत बना लाने की दा'वतें देने और उन सब के आजिज़ो दरमांदा (मजबूर) रह जाने के बा'द येह कलिमा कहना और ऐसा इद्दिआए बातिल (बातिल दा'वा) करना निहायत ज़लील हरकत है। **53 :** कुफ़्फ़ार और उन में येह कहने वाला या नज़्र बिन हारिस था या अबू जहल जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है। **54 :** क्यूं कि रहमतुल्लिल आलमीन बना कर भेजे गए हो और सुन्नते इलाहिय्यह येह है कि जब तक किसी क़ौम में उस के नबी मौजूद हों उन पर आम बरबादी का अज़ाब नहीं भेजता जिस से सब के सब हलाक हो जाएं और कोई न बचे। एक जमाअ़ते मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर उस वक़्त नाज़िल हुई जब आप मक्कए मुकर्रमा में मुक़ीम थे, फिर जब आप ने हिजरत फ़रमाई और कुछ मुसल्मान रह गए जो इस्तिग़फ़ार किया करते थे तो ''وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ'' नाज़िल हुवा, जिस में बताया गया कि जब तक इस्तिग़फ़ार करने वाले ईमानदार मौजूद हैं उस वक़्त तक भी अज़ाब न आएगा, फिर जब वोह हज़रात भी मदीनए तय्यिबा को रवाना हो गए तो अल्लाह तआला ने फ़त्हे मक्का का इज़्न दिया और येह अज़ाबे मौऊद (जिस का वा'दा किया गया वोह) आ गया जिस की निस्बत इस आयत में फ़रमाया : ''وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ'' मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि ''مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ'' भी कुफ़्फ़ार का मक़ूला है जो उन से हिकायतन नक़्ल किया गया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की जहालत का ज़िक्र फ़रमाया कि इस क़दर अहमक़ हैं, आप ही तो येह कहते हैं कि या रब ! अगर येह तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर अज़ाब नाज़िल कर, और आप ही येह कहते हैं कि या मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! जब तक आप हैं अज़ाब नाज़िल न होगा। क्यूं कि कोई उम्मत अपने नबी की मौजूदगी में हलाक नहीं की जाती। किस क़दर मुआरिज़ (एक दूसरे के मुख़ालिफ़) अक़्वाल हैं।

www.dawateislami.net

يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ

बख़्शिश मांग रहे हैं[55] और उन्हें क्या है कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न करे वोह तो मस्जिदे ह़राम

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْۤا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

से रोक रहे हैं[56] और वोह इस के अह्ल नहीं[57] उस के औलिया तो परहेज़ गार ही हैं

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا

मगर उन में अक्सर को इ़ल्म नहीं और का'बे के पास उन की नमाज़ नहीं मगर

مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

सीटी और ताली[58] तो अब अ़ज़ाब चखो[59] बदला अपने कुफ़्र का बेशक

كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا

काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोकें[60] तो अब उन्हें ख़र्च करेंगे

ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۬ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى جَهَنَّمَ

फिर वोह उन पर पछतावा होंगे[61] फिर मग़्लूब कर दिये जाएंगे और काफ़िरों का ह़श्र

يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۶﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ

जहन्नम की त़रफ़ होगा इस लिये कि अल्लाह गन्दे को सुथरे से जुदा फ़रमा दे[62] और नजासतों को

بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ

तले ऊपर रख कर सब एक ढेर बना कर जहन्नम में डाल दे वोही नुक़्सान

الْخٰسِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ ع قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ ع ۹ ۱۸

पाने वाले हैं[63] तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया जाएगा[64]

55 : इस आयत से साबित हुवा कि "इस्तिग़्फ़ार" अ़ज़ाब से अम्न में रहने का ज़रीआ़ है। ह़दीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के लिये दो अमानें उतारीं, एक मेरा उन में तशरीफ़ फ़रमा होना, एक उन का इस्तिग़्फ़ार करना **56 :** और मोमिनीन को त़वाफ़े का'बा के लिये नहीं आने देते जैसा कि वाक़िअ़ए हुदैबिया के साल सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को रोका। **57 :** और का'बे के उमूर में तसर्रुफ़ व इन्तिज़ाम का कोई इख़्तियार नहीं रखते क्यूं कि मुश्रिक हैं। **58 :** या'नी नमाज़ की जगह सीटी और ताली बजाते हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि क़ुरैश नंगे हो कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते थे और सीटियां और तालियां बजाते थे और येह फ़े'ल उन का या तो इस ए'तिक़ादे बातिल से था कि सीटी और ताली बजाना इ़बादत है या इस शरारत से कि उन के इस शोर से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नमाज़ में परेशानी हो। **59 :** क़त्ल व क़ैद का बद्र में **60 :** या'नी लोगों को अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाने से मानेअ़ हों। **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ार में से उन बारह क़ुरैशियों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने लश्करे कुफ़्फ़ार का खाना अपने ज़िम्मे लिया था और हर एक उन में से लश्कर को खाना देता था हर रोज़ दस ऊंट। **61 :** कि माल भी गया और काम भी न बना। **62 :** या'नी गुरौहे

www.dawateislami.net

وَ اِنْ یَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۳۸﴾ وَ قَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا

और अगर फिर वोही करें तो अगलों का दस्तूर गुज़र चुका है[65] और उन से लड़ो यहां तक

تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ یَكُوْنَ الدِّیْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا

कि कोई फ़साद[66] बाक़ी न रहे और सारा दीन अल्लाह ही का हो जाए फिर अगर वोह बाज़ रहें तो अल्लाह

یَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۳۹﴾ وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى

उन के काम देख रहा है और अगर वोह फिरें[67] तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है[68] तो क्या ही अच्छा मौला

وَ نِعْمَ النَّصِیْرُ ﴿۴۰﴾

और क्या ही अच्छा मददगार

कुफ़्फ़ार को गुरौहे मोमिनीन से मुमताज़ कर दे। **63 :** कि दुन्या व आख़िरत के टोटे में रहे और अपने माल ख़र्च कर के अ़ज़ाबे आख़िरत मोल लिया। **64 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि काफ़िर जब कुफ़्र से बाज़ आए और इस्लाम लाए तो उस का पहला कुफ़्र और मआ़सी (तमाम गुनाह) मुआ़फ़ हो जाते हैं। **65** कि अल्लाह तआ़ला अपने दुश्मनों को हलाक करता है और अपने अम्बिया और औलिया की मदद फ़रमाता है। **66 :** या'नी शिर्क **67 :** ईमान लाने से **68 :** तुम उस की मदद पर भरोसा रखो।

www.dawateislami.net

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत लो[69] तो उस का पांचवां हिस्सा ख़ास अल्लाह और रसूल और क़राबत

الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ

वालों और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों का है[70] अगर तुम ईमान लाए हो अल्लाह पर

وَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی

और उस पर जो हम ने अपने बन्दे पर फ़ैसले के दिन उतारा जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं[71] और अल्लाह

كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۴۱﴾ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی

सब कुछ कर सकता है जब तुम नाले के उस किनारे थे[72] और काफ़िर परले किनारे

وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ ۙ وَ

और क़ाफ़िला[73] तुम से तराई में[74] और अगर तुम आपस में कोई वा'दा करते तो ज़रूर वक़्त पर बराबर न पहुंचते[75]

لٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۬ۙ لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ

लेकिन येह इस लिये कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है[76] कि जो हलाक हो दलील से हलाक हो[77]

وَّیَحْیٰی مَنْ حَیَّ عَنْۢ بَیِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۴۲﴾ۙ اِذْ یُرِیْكَهُمُ

और जो जिये दलील से जिये[78] और बेशक अल्लाह ज़रूर सुनता जानता है जब कि ऐ महबूब अल्लाह तुम्हें

69 : ख़्वाह क़लील या कसीर। "ग़नीमत" वोह माल है जो मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार से जंग में ब त़रीक़े क़हरो ग़लबा ह़ासिल हो। **मस्अला :** माले ग़नीमत पांच हिस्सों पर तक़्सीम किया जाए उस में से चार हिस्से ग़ानिमीन (ग़ाज़ियों) के। **70 मस्अला :** ग़नीमत का पांचवां हिस्सा फिर पांच हिस्सों पर तक़्सीम होगा उन में से एक हिस्सा जो कुल माल का पच्चीसवां हिस्सा हुवा वोह रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم के लिये है और एक हिस्सा आप के अहले क़राबत के लिये और तीन हिस्से यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिये। **मस्अला :** रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم के बा'द हु़ज़ूर और आप के अहले क़राबत के हिस्से भी यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को मिलेंगे और येह पांचवां हिस्सा उन्हीं तीन पर तक़्सीम हो जाएगा। येही क़ौल है इमाम अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ عنہ का। **71 :** इस दिन से रोज़े बद्र मुराद है और दोनों फ़ौजों से मुसल्मानों और काफ़िरों की फ़ौजें और येह वाक़िआ़ सतरह या उन्नीस रमज़ान को पेश आया। अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की ता'दाद तीन सो दस से कुछ ज़ियादा थी और मुश्रिकीन हज़ार के क़रीब थे। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हज़ीमत (शिकस्त) दी उन में से सत्तर से ज़ियादा मारे गए और इतने ही गिरिफ़्तार हुए। **72 :** जो मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ है **73 :** कुरैश का जिस में अबू सुफ़्यान वग़ैरा थे। **74 :** तीन मील के फ़ासिले पर साह़िल की त़रफ़। **75 :** या'नी अगर तुम और वोह बाहम जंग का कोई वक़्त मुअ़य्यन करते फिर तुम्हें अपनी क़िल्लत व बे सामानी और उन की कसरत व सामान का ह़ाल मा'लूम होता तो ज़रूर तुम हैबत व अन्देशे से मीआ़द में इख़्तिलाफ़ करते। **76 :** या'नी इस्लाम और मुस्लिमीन की नुसरत और दीन का ए'ज़ाज़ और दुश्मनाने दीन की हलाकत, इस लिये तुम्हें उस ने बे मीआ़द (वक़्त मुक़र्रर किये बिग़ैर) ही जम्अ़ कर दिया। **77 :** या'नी हु़ज्जते ज़ाहिरा क़ाइम होने और इ़ब्रत का मुआ़यना कर लेने के बा'द। **78 :** मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि हलाक से कुफ़्र, ह़यात से ईमान मुराद है। मा'ना येह हैं कि जो कोई काफ़िर हो उस को चाहिये कि पहले हु़ज्जत क़ाइम करे और ऐसे ही जो ईमान लाए वोह यक़ीन के साथ ईमान लाए और हु़ज्जत व बुरहान से जान ले कि येह दीन ह़क़ है और बद्र का वाक़िआ़ आयाते वाज़ेह़ा में से है, इस के बा'द जिस ने कुफ़्र इख़्तियार किया वोह मकाबिर (बड़ा मग़रूर) है, अपने नफ़्स को मुग़ालत़ा (धोका) देता है।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا ؕ وَ لَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَ لَتَنَازَعْتُمْ

काफ़िरों को तुम्हारी ख़्वाब में थोड़ा दिखाता था[79] और ऐ मुसल्मानो अगर वोह तुम्हें बहुत कर के दिखाता तो ज़रूर तुम बुज़दिली करते और मुआमले में

فِی الْاَمْرِ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۴۳﴾ وَ اِذْ

झगड़ा डालते[80] मगर **अल्लाह** ने बचा लिया[81] बेशक वोह दिलों की बात जानता है और

یُرِیْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَیْتُمْ فِیْۤ اَعْیُنِكُمْ قَلِیْلًا وَّ یُقَلِّلُكُمْ فِیْۤ اَعْیُنِهِمْ

जब लड़ते वक़्त[82] तुम्हें काफ़िर थोड़े कर के दिखाए[83] और तुम्हें उन की निगाहों में थोड़ा किया[84]

لِیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۴۴﴾ ع یٰۤاَیُّهَا

कि **अल्लाह** पूरा करे जो काम होना है[85] और **अल्लाह** की तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है ऐ

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِیْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ

ईमान वालो जब किसी फ़ौज से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम रहो और **अल्लाह** की याद बहुत करो[86] कि तुम

تُفْلِحُوْنَ ﴿۴۵﴾ ج وَ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَ تَذْهَبَ

मुराद को पहुंचो और **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ो नहीं कि फिर बुज़दिली करोगे और तुम्हारी बंधी हुई

رِیْحُكُمْ وَ اصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۴۶﴾ ج وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ

हवा जाती रहेगी[87] और सब्र करो बेशक **अल्लाह** सब्र वालों के साथ है[88] और उन जैसे न होना जो

79 : येह **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत थी कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार की ता'दाद थोड़ी दिखाई गई और आप ने अपना येह ख़्वाब अस्ह़ाब से बयान किया इस से उन की हिम्मतें बढ़ीं और अपने ज़ो'फ़ व कमज़ोरी का अन्देशा न रहा और उन्हें दुश्मन पर जुरअत पैदा हुई और क़ल्ब क़वी हुए। अम्बिया का ख़्वाब ह़क़ होता है आप को कुफ़्फ़ार दिखाए गए थे और ऐसे कुफ़्फ़ार जो दुन्या से बे ईमान जाएं और कुफ़्र ही पर उन का ख़ातिमा हो वोह थोड़े ही थे क्यूं कि जो लश्कर मुक़ाबिल आया था उस में कसीर लोग वोह थे जिन्हें अपनी ज़िन्दगी में ईमान नसीब हुवा और ख़्वाब में क़िल्लत की ता'बीर ज़ो'फ़ से है। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों को ग़ालिब फ़रमा कर कुफ़्फ़ार का ज़ो'फ़ ज़ाहिर कर दिया। **80 :** और सबात व फ़िरार (साबित क़दम रहने और मैदान से भागने) में मुतरद्दिद रहते। **81 :** तुम को बुज़दिली और तरद्दुद और बाहमी इख़्तिलाफ़ से। **82 :** ऐ मुसल्मानो ! **83 :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि वोह हमारी निगाहों में इतने कम जचे कि मैं ने अपने बराबर वाले एक शख़्स से कहा क्या तुम्हारे गुमान में काफ़िर सत्तर होंगे उस ने कहा कि मेरे ख़याल में सो हैं और थे हज़ार। **84 :** यहां तक कि अबू जह्ल ने कहा कि इन्हें रस्सियों में बांध लो गोया कि वोह मुसल्मानों की जमाअ़त को इतना क़लील देख रहा था कि मुक़ाबला करने और जंग आज़्मा होने के लाइक़ भी ख़याल नहीं करता था और मुश्रिकीन को मुसल्मानों की ता'दाद थोड़ी दिखाने में येह हिक्मत थी कि मुश्रिकीन मुक़ाबले पर जम जाएं भाग न पड़ें और येह बात इब्तिदा में थी, मुक़ाबला होने के बा'द उन्हें मुसल्मान बहुत ज़ियादा नज़र आने लगे। **85 :** या'नी इस्लाम का ग़लबा और मुसल्मानों की नुसरत और शिर्क का इब्त़ाल और मुश्रिकीन की ज़िल्लत और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के मो'जिज़े का इज़्हार कि जो फ़रमाया था वोह हुवा कि जमाअ़ते क़लीला लश्करे गिरां (बड़े लश्कर) पर फ़त्ह़ याब हुई। **86 :** उस से मदद चाहो और कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब होने की दुआएं करो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इन्सान को हर ह़ाल में लाज़िम है कि वोह अपने क़ल्ब व ज़बान को ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रखे और किसी सख़्ती व परेशानी में भी इस से ग़ाफ़िल न हो। **87 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बाहमी तनाज़ोअ़ ज़ो'फ़ व कमज़ोरी और बे वक़ारी का सबब है और येह भी मा'लूम हुवा कि बाहमी तनाज़ोअ़ से मह़फ़ूज़ रहने की तदबीर ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी और दीन का इत्तिबाअ़ है। **88 :** उन का मुईन व मददगार।

www.dawateislami.net

خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ

अपने घर से निकले इतराते और लोगों के दिखाने को और अल्लाह की राह से रोकते[89]

وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۴۷﴾ وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ

और उन के सब काम अल्लाह के क़ाबू में हैं और जब कि शैतान ने उन की निगाह में उन के काम भले कर दिखाए[90] और बोला

لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ

आज तुम पर कोई शख़्स ग़ालिब आने वाला नहीं और तुम मेरी पनाह में हो तो जब दोनों लश्कर आमने सामने हुए

نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْۤ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْۤ

उलटे पाउं भागा और बोला मैं तुम से अलग हूं[91] मैं वोह देखता हूं जो तुम्हें नज़र नहीं आता[92] मैं

اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۴۸﴾ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ ع

अल्लाह से डरता हूं[93] और अल्लाह का अज़ाब सख़्त है जब कहते थे मुनाफ़िक़[94] और वोह जिन के

89 शाने नुज़ूल : येह आयत कुफ़्फ़ारे कुरैश के हक़ में नाज़िल हुई जो बद्र में बहुत इतराते और तकब्बुर करते आए थे, सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुआ की : या रब ! येह कुरैश आ गए, तकब्बुर व गुरूर में सरशार और जंग के लिये तय्यार, तेरे रसूल को झुटलाते हैं, या रब ! अब वोह मदद इनायत हो जिस का तू ने वा'दा किया था। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जब अबू सुफ़्यान ने देखा कि क़ाफ़िले को कोई ख़तरा नहीं रहा तो उन्हों ने कुरैश के पास पयाम भेजा कि तुम क़ाफ़िले की मदद के लिये आए थे, अब इस के लिये कोई ख़तरा नहीं है लिहाज़ा वापस जाओ, इस पर अबू जह्ल ने कहा कि ख़ुदा की क़सम हम वापस न होंगे यहां तक कि हम बद्र में उतरें, तीन रोज़ क़ियाम करें, ऊंट ज़ब्ह करें, बहुत से खाने पकाएं, शराबें पियें, कनीज़ों का गाना बजाना सुनें, अरब में हमारी शोहरत हो और हमारी हैबत हमेशा बाक़ी रहे, लेकिन ख़ुदा को कुछ और ही मन्ज़ूर था, जब वोह बद्र में पहुंचे तो जामे शराब की जगह उन्हें साग़रे मौत पीना पड़ा और कनीज़ों की साज़ो नवा की जगह रोने वालियां उन्हें रोईं। अल्लाह तआला मोमिनीन को हुक्म फ़रमाता है कि इस वाक़िए से इब्रत हासिल करें और समझ लें कि फ़ख़्रो रिया और गुरूरो तकब्बुर का अन्जाम ख़राब है बन्दे को इख़्लास और इताअ़ते ख़ुदा व रसूल चाहिये। **90 :** और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की अदावत और मुसल्मानों की मुख़ालफ़त में जो कुछ उन्हों ने किया था इस पर उन की ता'रीफ़ें कीं और उन्हें ख़बीस आ'माल पर क़ाइम रहने की रग़बत दिलाई और जब कुरैश ने बद्र में जाने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया तो उन्हें याद आया कि उन के और क़बीलए बनी बक्र के दरमियान अदावत है मुम्किन था कि वोह येह ख़याल कर के वापसी का क़स्द करते, येह शैतान को मन्ज़ूर न था इस लिये उस ने येह फ़रेब किया कि वोह सुराक़ा बिन मालिक बिन जु'शुम बनी किनाना के सरदार की सूरत में नुमूदार हुवा और एक लश्कर और एक झन्डा साथ ले कर मुश्रिकीन से आ मिला और उन से कहने लगा कि मैं तुम्हारा ज़िम्मादार हूं आज तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं। जब मुसल्मानों और काफ़िरों के दोनों लश्कर सफ़ आरा हुए और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक मुश्ते ख़ाक मुश्रिकीन के मुंह पर मारी और वोह पीठ फेर कर भागे और हज़रते जिब्रील इब्लीसे लईन की तरफ़ बढ़े जो सुराक़ा की शक्ल में हारिस बिन हिशाम का हाथ पकड़े हुए था, वोह हाथ छुड़ा कर मअ़ अपने गुरौह के भागा, हारिस पुकारता रह गया सुराक़ा ! सुराक़ा ! तुम तो हमारे ज़ामिन हुए थे कहां जाते हो ? कहने लगा : मुझे वोह नज़र आता है जो तुम्हें नज़र नहीं आता, इस आयत में इस वाक़िए का बयान है। **91 :** और अम्न की जो ज़िम्मादारी ली थी उस से सुबुक दोश (बरिय्युज़्ज़िम्मा) होता हूं, इस पर हारिस बिन हिशाम ने कहा कि हम तेरे भरोसे पर आए थे तू इस हालत में हमें रुस्वा करेगा ! कहने लगा : **92 :** या'नी लश्करे मलाएका। **93 :** कहीं वोह मुझे हलाक न कर दे। जब कुफ़्फ़ार को हज़ीमत (हार) हुई और वोह शिकस्त खा कर मक्कए मुकर्रमा पहुंचे तो उन्हों ने येह मश्हूर किया कि हमारी शिकस्त व हज़ीमत का बाइस सुराक़ा हुवा। सुराक़ा को येह ख़बर पहुंची तो उसे हैरत हुई और उस ने कहा : येह लोग क्या कहते हैं ! न मुझे इन के आने की ख़बर न जाने की। हज़ीमत हो गई जब मैं ने सुना है। तो कुरैश ने कहा कि तू फ़ुलां फ़ुलां रोज़ हमारे पास आया था। उस ने क़सम खाई कि येह ग़लत है, तब उन्हें मा'लूम हुवा कि वोह शैतान था। **94 :** मदीने के।

فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰۤؤُلَآءِ دِیْنُهُمْ ؕ وَ مَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ

दिलों में आज़ार (बीमारी) है[95] कि येह मुसलमान अपने दीन पर मग़रूर हैं[96] और जो अल्लाह पर भरोसा करे[97] तो बेशक अल्लाह[98]

عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۴۹﴾ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذْ یَتَوَفَّى الَّذِیْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓىٕكَةُ یَضْرِبُوْنَ

ग़ालिब हिक्मत वाला है और कभी तू देखे जब फ़िरिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं मार रहे हैं

وُجُوْهَهُمْ وَ اَدْبَارَهُمْ ۚ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِیْقِ ﴿۵۰﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

उन के मुंह पर और उन की पीठ पर[99] और चखो आग का अ़ज़ाब येह[100] बदला है उस का जो तुम्हारे हाथों ने

اَیْدِیْكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿۵۱﴾ ۙ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ

आगे भेजा[101] और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता[102] जैसे फ़िरऔ़न वालों

وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ

और उन से अगलों का दस्तूर[103] वोह अल्लाह की आयतों से मुन्किर हुए तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा

اِنَّ اللّٰهَ قَوِیٌّ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۵۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ یَكُ مُغَیِّرًا نِّعْمَةً

बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला सख़्त अ़ज़ाब वाला है येह इस लिये कि अल्लाह किसी क़ौम से जो ने'मत उन्हें

اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۳﴾ ۙ

दी थी बदलता नहीं जब तक वोह ख़ुद न बदल जाएं[104] और बेशक अल्लाह सुनता जानता है

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ

जैसे फ़िरऔ़न वालों और उन से अगलों का दस्तूर उन्हों ने अपने रब की आयतें झुटलाईं

95 : येह मक्कए मुकर्रमा के कुछ लोग थे जिन्हों ने कलिमए इस्लाम तो पढ़ लिया था मगर अभी तक उन के दिलों में शक व तरद्दुद बाक़ी था। जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जंग के लिये निकले येह भी उन के साथ बद्र में पहुंचे, वहां जा कर मुसल्मानों को क़लील देखा तो शक और बढ़ा और मुरतद हो गए और कहने लगे : **96 :** कि बा वुजूद अपनी ऐसी क़लील ता'दाद के ऐसे लश्करे गिरां (बड़े लश्कर) के मुक़ाबिल हो गए, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **97 :** और अपना काम उस के सिपुर्द कर दे और उस के फ़ज़्लो एहसान पर मुत्मइन हो **98 :** उस का हाफ़िज़ो नासिर है। **99 :** लोहे के गुर्ज़ जो आग में लाल किये हुए हैं और उन से जो ज़ख़्म लगता है उस में आग पड़ती है और सोज़िश होती है, उन से मार कर फ़िरिश्ते काफ़िरों से कहते हैं : **100 :** मुसीबतें और अ़ज़ाब **101 :** या'नी जो तुम ने कस्ब किया कुफ़्र और इस्यान। **102 :** किसी पर बे जुर्म अ़ज़ाब नहीं करता और काफ़िर पर अ़ज़ाब करना अ़द्ल है। **103 :** या'नी इन काफ़िरों की आ़दत कुफ़्र व सरकशी में फ़िरऔ़नी और इन से पहलों की मिस्ल है तो जिस त़रह़ वोह हलाक किये गए येह भी रोज़े बद्र क़त्ल व क़ैद में मुब्तला किये गए। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जिस त़रह़ फ़िरऔ़नियों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत को ब यक़ीन जान कर उन की तक्ज़ीब की येही हाल इन लोगों का है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत को जान पहचान कर तक्ज़ीब करते हैं। **104 :** और ज़ियादा बदतर हाल में मुब्तला न हों जैसे कि अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे मक्का को रोज़ी दे कर भूक की तक्लीफ़ रफ़्अ़ की, अम्न दे कर ख़ौफ़ से नजात दी और उन की त़रफ़ अपने ह़बीब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नबी बना कर मब्ऊ़स किया। उन्हों ने इन ने'मतों पर शुक्र तो न किया बजाए इस के येह सरकशी की,

www.dawateislami.net

فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِیْنَ ﴿۵۴﴾

तो हम ने उन को उन के गुनाहों के सबब हलाक किया और हम ने फ़िरऔन वालों को डुबो दिया[105] और वोह सब ज़ालिम थे

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۵﴾ ۖۚ اَلَّذِیْنَ

बेशक सब जानवरों में बदतर **अल्लाह** के नज़्दीक वोह हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते वोह जिन से

عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِیْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا یَتَّقُوْنَ ﴿۵۶﴾

तुम ने मुआहदा किया था फिर हर बार अपना अ़हद तोड़ देते हैं[106] और डरते नहीं[107]

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِی الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ یَذَّكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾

तो अगर तुम कहीं उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसा क़त्ल करो जिस से उन के पसमांदों को भगाओ[108] इस उम्मीद पर कि शायद उन्हें इब्रत हो[109]

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِیَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَیْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا

और अगर तुम किसी क़ौम से दग़ा (अ़हद शिकनी) का अन्देशा करो[110] तो उन का अ़हद उन की त़रफ़ फेंक दो बराबरी पर[111] बेशक दग़ा वाले

یُحِبُّ الْخَآئِنِیْنَ ﴿۵۸﴾ ع وَلَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ ٧ ع ١٠ ٣

अल्लाह को पसन्द नहीं और हरगिज़ काफ़िर इस घमन्ड में न रहें कि वोह[112] हाथ से निकल गए बेशक वोह

لَا یُعْجِزُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ

आ़जिज़ नहीं करते[113] और उन के लिये तय्यार रखो जो क़ुव्वत तुम्हें बन पड़े[114] और जितने घोड़े

कि नबी عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की, इन की ख़ूंरेज़ी के दरपै हुए और लोगों को राहे हक़ से रोका। सुद्दी ने कहा कि **अल्लाह** की ने'मत हज़रत सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم हैं। **105 :** ऐसे ही येह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हैं जिन्हें बद्र में हलाक किया गया। **106 शाने नुज़ूल :** ''اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ'' और इस के बा'द की आयतें बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुईं जिन का रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़हद था कि वोह आप से न लड़ेंगे न आप के दुश्मनों की मदद करेंगे। उन्हों ने अ़हद तोड़ा और मुश्रिकीने मक्का ने जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से जंग की तो उन्हों ने हथियारों से उन की मदद की फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से मा'ज़िरत की, कि हम भूल गए थे और हम से क़ुसूर हुवा, फिर दोबारा अ़हद किया और उस को भी तोड़ा। **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें सब जानवरों से बदतर बताया क्यूं कि कुफ़्फ़ार सब जानवरों से बदतर हैं और बा वुजूद कुफ़्र के अ़हद शिकन भी हों तो और भी ख़राब। **107 :** ख़ुदा से, न अ़हद शिकनी के ख़राब नतीजे से और न इस से शरमाते हैं, बा वुजूदे कि अ़हद शिकनी हर आ़क़िल के नज़्दीक शर्मनाक जुर्म है और अ़हद शिकनी करने वाला सब के नज़्दीक बे ए'तिबार हो जाता है, जब उन की बे ग़ैरती इस दरजे पहुंच गई तो यक़ीनन वोह जानवरों से बदतर हैं। **108 :** और उन की हिम्मतें तोड़ दो और उन की जमाअ़तें मुन्तशिर कर दो। **109 :** और वोह पन्द पज़ीर (नसीहत क़बूल करने वाले) हों। **110 :** और ऐसे आसार व क़राइन पाए जाएं जिन से साबित हो कि वोह ग़द्र करेंगे और अ़हद पर क़ाइम न रहेंगे **111 :** या'नी उन्हें उस अ़हद की मुख़ालफ़त करने से पहले आगाह कर दो कि तुम्हारी बद अ़हदी के क़राइन पाए गए लिहाज़ा वोह अ़हद क़ाबिले ए'तिबार न रहा, उस की पाबन्दी न की जाएगी। **112 :** जंगे बद्र से भाग कर क़त्ल व क़ैद से बच गए और मुसल्मानों के **113 :** अपने गिरिफ़्तार करने वाले को। इस के बा'द मुसल्मानों को ख़िताब होता है। **114 :** ख़्वाह वोह हथियार हों या क़ल्ए या तीर अन्दाज़ी। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस आयत की तफ़्सीर में क़ुव्वत के मा'ना रमी या'नी तीर अन्दाज़ी बताए।

الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا

बांध सको कि उन से उन के दिलों में धाक बिठाओ जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं[115] और उन के सिवा कुछ औरों के दिलों में

تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

जिन्हें तुम नहीं जानते[116] अल्लाह उन्हें जानता है और अल्लाह की राह में जो कुछ ख़र्च करोगे

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا

तुम्हें पूरा दिया जाएगा[117] और किसी त़रह़ घाटे में नहीं रहोगे और अगर वोह सुल्ह़ की त़रफ़ झुकें तो तुम भी झुको[118]

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْۤا اَنْ

और अल्लाह पर भरोसा रखो बेशक वोही है सुनता जानता और अगर वोह तुम्हें

يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْۤ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَ

फ़रेब दिया चाहें[119] तो बेशक अल्लाह तुम्हें काफ़ी है वोही है जिस ने तुम्हें ज़ोर दिया अपनी मदद का और

بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ۙ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ

मुसल्मानों का और उन के दिलों में मैल कर दिया (उल्फ़त पैदा कर दी)[120] अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है

جَمِيْعًا مَّاۤ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ

सब ख़र्च कर देते उन के दिल न मिला सकते[121] लेकिन अल्लाह ने उन के दिल मिला दिये बेशक वोही है ग़ालिब

ع ٨ ٦ ٣ حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾ ع

हिक्मत वाला ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) अल्लाह तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसल्मान तुम्हारे पैरव हुए[122]

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) मुसल्मानों को जिहाद की तरग़ीब दो अगर तुम में के

115 : या'नी कुफ़्फ़ार अहले मक्का हों या दूसरे । **116 :** इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि यहां औरों से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं । ह़सन का क़ौल है कि काफ़िर जिन्न । **117 :** उस की जज़ा वाफ़िर मिलेगी **118 :** उन से सुल्ह़ क़बूल कर लो । **119 :** और सुल्ह़ का इज़्हार मक्र (फ़रेब देने) के लिये करें **120 :** जैसा कि क़बीलए औस व ख़ज़रज में मह़ब्बत व उल्फ़त पैदा कर दी बा वुजूदे कि इन में सो बरस से ज़ियादा की अ़दावतें थीं और बड़ी बड़ी लड़ाइयां होती रहती थीं, येह मह़ज़ अल्लाह का करम है । **121 :** या'नी उन की बाहमी अ़दावत इस ह़द तक पहुंच गई थी कि उन्हें मिला देने के लिये तमाम सामान (ह़र्बे) बेकार हो चुके थे और कोई सूरत बाक़ी न रही थी, ज़रा ज़रा सी बात में बिगड़ जाते और सदियों तक जंग बाक़ी रहती, किसी त़रह़ दो दिल न मिल सकते । जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मब्ऊ़स हुए और अ़रब लोग आप पर ईमान लाए और उन्हों ने आप का इत्तिबाअ़ किया तो येह ह़ालत बदल गई और दिलों से देरीना अ़दावतें (पुरानी दुश्मनियां) और कीने दूर हुए और ईमानी मह़ब्बतें पैदा हुईं, येह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का रोशन मो'जिज़ा है । **122 शाने नुज़ूल :** सईद बिन जुबैर ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत करते हैं कि येह आयत ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ के ईमान लाने के बारे

www.dawateislami.net

عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْۤا

बीस सब्र वाले होंगे दो सो पर ग़ालिब होंगे और अगर तुम में के सो हों तो काफ़िरों के

اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ

हज़ार पर ग़ालिब आएंगे इस लिये कि वोह समझ नहीं रखते[123] अब **अल्लाह** ने तुम पर से तख़्फ़ीफ़

عَنْكُمْ وَ عَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا

फ़रमा दी और उसे मा'लूम है कि तुम कमज़ोर हो तो अगर तुम में सो सब्र वाले हों दो सो पर ग़ालिब

مِائَتَيْنِ ۚ وَ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ

आएंगे और अगर तुम में के हज़ार हों तो दो हज़ार पर ग़ालिब होंगे **अल्लाह** के हुक्म से और **अल्लाह**

مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي

सब्र वालों के साथ है किसी नबी को लाइक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे जब तक ज़मीन में उन का ख़ून ख़ूब

الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖۗ وَ اللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَ اللّٰهُ

न बहाए[124] तुम लोग दुन्या का माल चाहते हो[125] और **अल्लाह** आख़िरत चाहता है[126] और **अल्लाह**

में नाज़िल हुई। ईमान से सिर्फ़ तेंतीस मर्द और छ[6] औरतें मुशर्रफ़ हो चुके थे, तब हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ इस्लाम लाए। इस क़ौल की बिना पर येह आयत मक्की है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के हुक्म से मदनी सूरत में लिखी गई। एक क़ौल येह है कि येह आयत ग़ज़्वए बद्र में क़ब्ले क़िताल नाज़िल हुई, इस तक़्दीर पर आयत मदनी है और मोमिनीन से यहां एक क़ौल में अन्सार, एक में तमाम मुहाजिरीन व अन्सार मुराद हैं। **123 :** येह **अल्लाह** तआला की तरफ़ से वा'दा और बिशारत है कि मुसल्मानों की जमाअत साबिर रहे तो ब मददे इलाही दस गुने काफ़िरों पर ग़ालिब रहेगी क्यूं कि कुफ़्फ़ार जाहिल हैं और उन की ग़रज़ जंग से न हुसूले सवाब है न ख़ौफ़े अ़ज़ाब, जानवरों की तरह लड़ते भिड़ते हैं, तो वोह लिल्लाहिय्यत (इख़्लास) के साथ लड़ने वाले के मुक़ाबिल क्या ठहर सकेंगे। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो मुसल्मानों पर फ़र्ज़ कर दिया गया कि मुसल्मानों का एक दस के मुक़ाबले से न भागे फिर आयत "اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ" नाज़िल हुई तो येह लाज़िम किया गया कि एक सो दो सो के मुक़ाबिल क़ाइम रहें या'नी दस गुने से मुक़ाबले की फ़र्ज़िय्यत मन्सूख़ हुई और दो गुने के मुक़ाबले से भागना मम्नूअ़ रखा गया। **124 :** और क़त्ले कुफ़्फ़ार में मुबालग़ा कर के कुफ़्र की ज़िल्लत और इस्लाम की शौकत का इज़्हार न करे। **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरा की अहादीस में है कि जंगे बद्र में सत्तर काफ़िर क़ैद कर के सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के हुज़ूर में लाए गए, हुज़ूर ने उन के मुतअ़ल्लिक़ सहाबा से मश्वरा तलब फ़रमाया। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ने अ़र्ज़ किया कि येह आप की क़ौम व क़बीले के लोग हैं, मेरी राय में इन्हें फ़िदया ले कर छोड़ दिया जाए इस से मुसल्मानों को क़ुव्वत भी पहुंचेगी और क्या अ़जब है कि **अल्लाह** तआला इन लोगों को इस्लाम नसीब करे। हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि इन लोगों ने आप की तक्ज़ीब की, आप को मक्कए मुकर्रमा में न रहने दिया, येह कुफ़्र के सरदार और सर परस्त हैं, इन की गरदनें उड़ाइये **अल्लाह** तआला ने आप को फ़िदये से ग़नी किया है, अ़लिय्ये मुर्तज़ा को अ़क़ील पर और हज़रते हम्ज़ा को अ़ब्बास पर और मुझे मेरे क़राबती पर मुक़र्रर कीजिये कि इन की गरदनें मार दें। आख़िर कार फ़िदया ही लेने की राय क़रार पाई और जब फ़िदया लिया गया तो आयत नाज़िल हुई। **125 :** येह ख़िताब मोमिनीन को है और माल से फ़िदया मुराद है। **126 :** या'नी तुम्हारे लिये आख़िरत का सवाब जो क़त्ले कुफ़्फ़ार व ए'ज़ाज़े इस्लाम पर मुरत्तब है। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह हुक्म बद्र में था जब कि मुसल्मान थोड़े थे फिर जब मुसल्मानों की ता'दाद ज़ियादा हुई और वोह फ़ज़्ले इलाही से क़वी हुए तो क़ैदियों के ह़क़ में नाज़िल हुई "فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ وَ اِمَّا فِدَآءً" और **अल्लाह** तआला ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم और मोमिनीन को इख़्तियार दिया कि चाहे काफ़िरों को क़त्ल करें, चाहे उन्हें ग़ुलाम बनाएं, चाहे फ़िदया लें, चाहे आज़ाद करें। बद्र के क़ैदियों का फ़िदया चालीस ऊक़िया सोना फ़ी कस था जिस के सोलह सो दिरहम हुए।

www.dawateislami.net

٩ ع ٥ ٥

عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَاۤ اَخَذْتُمْ

ग़ालिब हिक्मत वाला है अगर अल्लाह पहले एक बात लिख न चुका होता[127] तो ऐ मुसल्मानो तुम ने जो काफ़िरों से बदले का माल ले लिया उस में

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖؗ وَّ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

तुम पर बड़ा अ़ज़ाब आता तो खाओ जो ग़नीमत तुम्हें मिली ह़लाल पाकीज़ा[128] और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ ع يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى ۙ

बख़्शने वाला मेह्रबान है ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में हैं उन से फ़रमाओ[129]

اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ

अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में भलाई जानी[130] तो जो तुम से लिया गया[131] इस से बेहतर तुम्हें अ़ता फ़रमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा

وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾ وَ اِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ

और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है[132] और ऐ मह़बूब अगर वोह[133] तुम से दग़ा चाहेंगे[134] तो इस से पहले अल्लाह ही की ख़ियानत कर चुके हैं

127 : येह कि इज्तिहाद पर अ़मल करने वाले से मुआख़ज़ा (पूछगछ) न फ़रमाएगा और यहां सह़ाबा ने इज्तिहाद ही किया था और उन की फ़िक्र में येही बात आई थी कि काफ़िरों को ज़िन्दा छोड़ देने में इन के इस्लाम लाने की उम्मीद है और फ़िदया लेने में दीन को तक़्वियत होती है और इस पर नज़र नहीं की गई कि क़त्ल में इ़ज़्ज़ते इस्लाम और तहदीदे कुफ़्फ़ार (काफ़िरों के दिलों में ख़ौफ़ और दबदबा बिठाना) है। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का इस दीनी मुआ़मले में सह़ाबा की राय दरयाफ़्त फ़रमाना मश्रूइय्यते इज्तिहाद की दलील है या "كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ" से वोह मुराद है जो उस ने लौहे़ मह़फ़ूज़ में लिखा कि अहले बद्र पर अ़ज़ाब न किया जाएगा। **128 :** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई तो अस्ह़ाबे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जो फ़िदये लिये थे उन से हाथ रोक लिये, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी ग़नीमतें ह़लाल की गईं उन्हें खाओ। सह़ीह़ैन की ह़दीस में है अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये ग़नीमतें ह़लाल कीं, हम से पहले किसी के लिये ह़लाल न की गई थीं। **129 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه के बारे में नाज़िल हुई है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के चचा हैं, येह कुफ़्फ़ारे कुरैश के उन दस सरदारों में से थे जिन्हों ने जंगे बद्र में लश्करे कुफ़्फ़ार के खाने की ज़िम्मादारी ली थी और येह इस ख़र्च के लिये बीस ऊक़िया सोना साथ ले कर चले थे (एक ऊक़िया चालीस दिरहम का होता है) लेकिन इन के ज़िम्मे जिस दिन खिलाना तज्वीज़ हुवा था ख़ास उसी रोज़ जंग का वाक़िआ़ पेश आया और क़िताल में खाने खिलाने की फ़ुरसत व मोहलत न मिली तो येह बीस ऊक़िया सोना इन के पास बच रहा, जब वोह गिरिफ़्तार हुए और येह सोना इन से ले लिया गया तो इन्हों ने दरख़्वास्त की, कि येह सोना उन के फ़िदये में मह़सूब (शुमार) कर लिया जाए, मगर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्कार फ़रमाया इर्शाद किया जो चीज़ हमारी मुख़ालफ़त में सर्फ़ करने के लिये लाए थे वोह न छोड़ी जाएगी और ह़ज़रते अ़ब्बास पर इन के दोनों भतीजों अ़क़ील बिन अबी ता़लिब और नौफ़ल बिन ह़ारिस के फ़िदये का बार भी डाला गया तो ह़ज़रते अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) तुम मुझे इस ह़ाल में छोड़ोगे कि मैं बाक़ी उ़म्र कुरैश से मांग मांग कर बसर किया करूं ? तो हु़ज़ूर ने फ़रमाया कि फिर वोह सोना कहां है जिस को तुम्हारे मक्कए मुकर्रमा से चलते वक़्त तुम्हारी बीबी उम्मुल फ़ज़्ल ने दफ़्न किया है और तुम उन से कह कर आए हो कि ख़बर नहीं है कि मुझे क्या ह़ादिसा पेश आए अगर मैं जंग में काम आ जाऊं (मारा जाऊं) तो येह तेरा है और अ़ब्दुल्लाह और उ़बैदुल्लाह का और फ़ज़्ल और क़ुसम का (येह सब इन के बेटे थे)। ह़ज़रते अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया कि आप को कैसे मा'लूम हुवा ? हु़ज़ूर ने फ़रमाया : मुझे मेरे रब ने ख़बरदार किया है। इस पर ह़ज़रते अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया : मैं गवाही देता हूं बेशक आप सच्चे हैं और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक आप उस के बन्दे और रसूल हैं, मेरे इस राज़ पर अल्लाह के सिवा कोई मुत्तलअ़ न था और ह़ज़रते अ़ब्बास ने अपने भतीजों अ़क़ील व नौफ़ल को हुक्म दिया वोह भी इस्लाम लाए। **130 :** ख़ुलूसे ईमान और सिह़्ह़ते निय्यत से **131 :** या'नी फ़िदया। **132 :** जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास बह़रीन का माल आया जिस की मिक्दार अस्सी हज़ार थी तो हु़ज़ूर ने नमाज़े ज़ोहर के लिये वुज़ू किया और नमाज़ से पहले पहले कुल का कुल तक़्सीम कर दिया और ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه को हुक्म दिया कि इस में से ले लो। तो जितना उन से उठ सका उतना उन्हों ने ले लिया। वोह फ़रमाते थे कि येह उस से बेहतर है कि जो अल्लाह ने मुझ से लिया और मैं उस की मग़्फ़िरत की उम्मीद रखता हूं और उन के तमव्वुल (दौलत मन्द होने) का येह ह़ाल हुवा कि उन के बीस ग़ुलाम थे सब के सब ताजिर और उन में सब से कम सरमाया जिस का था उस का बीस हज़ार का था। **133 :** वोह क़ैदी **134 :** तुम्हारी बैअ़त से फिर कर और कुफ़्र इख़्तियार कर के।

www.dawateislami.net

قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

जिस पर उस ने इतने तुम्हारे क़ाबू में दे दिये[135] और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है बेशक जो ईमान लाए और

هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا

अल्लाह के लिये[136] घरबार छोड़े और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से लड़े[137] और वोह जिन्हों ने जगह दी

وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓىٕكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا

और मदद की[138] वोह एक दूसरे के वारिस हैं[139] और वोह जो ईमान लाए[140] और हिजरत न की

مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ

तुम्हें उन का तर्का कुछ नहीं पहुंचता जब तक हिजरत न करें और अगर वोह दीन में

فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ

तुम से मदद चाहें तो तुम पर मदद देना वाजिब है मगर ऐसी क़ौम पर कि तुम में उन में मुआहदा है और अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۷۲﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا

तुम्हारे काम देख रहा है और काफ़िर आपस में एक दूसरे के वारिस हैं[141] ऐसा

تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿۷۳﴾ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना और बड़ा फ़साद होगा[142] और वोह जो ईमान लाए और

هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓىٕكَ هُمُ

हिजरत की और अल्लाह की राह में लड़े और जिन्हों ने जगह दी और मदद की वोही

الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۷۴﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ

सच्चे ईमान वाले हैं उन के लिये बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[143] और जो बा'द को ईमान

135 : जैसा कि वोह बद्र में देख चुके हैं कि क़त्ल हुए, गिरिफ़्तार हुए, आयिन्दा भी अगर उन के अत़्वार वोही रहे तो उन्हें इसी का उम्मीदवार रहना चाहिये। **136 :** और उसी के रसूल की मह़ब्बत में उन्हों ने अपने **137 :** येह मुहाजिरीने अव्वलीन हैं। **138 :** मुसल्मानों की और उन्हें अपने मकानों में ठहराया, येह अन्सार हैं। इन मुहाजिरीन और अन्सार दोनों के लिये इर्शाद होता है : **139 :** मुहाजिर अन्सार के और अन्सार मुहाजिर के। येह विरासत आयत "وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ" से मन्सूख़ हो गई। **140 :** और मक्कए मुकर्रमा ही में मुक़ीम रहे **141 :** उन के और मोमिनीन के दरमियान विरासत नहीं। इस आयत से साबित हुवा कि मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार की मुवालात व मुवारसत से मन्अ़ किया गया और उन से जुदा रहने का हुक्म दिया गया और मुसल्मानों पर बाहम मेलजोल रखना लाज़िम किया गया। **142 :** या'नी अगर मुसल्मानों में बाहम तआ़वुन व तनासुर न हो और वोह एक दूसरे के मददगार हो कर एक कुव्वत न बन जाएं तो कुफ़्फ़ार क़वी होंगे और मुसल्मान ज़ईफ़ और येह बड़ा फ़ितना व फ़साद है। **143 :** पहली आयत में मुहाजिरीन व अन्सार के बाहमी तअ़ल्लुक़ात और उन में से हर एक के दूसरे के मुईन व नासिर होने का बयान था। इस आयत में इन दोनों के ईमान की तस्दीक़ और इन के मूरिदे रह़मते इलाही होने का ज़िक्र है।

www.dawateislami.net

بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓىٕكَ مِنْكُمْؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ

लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया वोह भी तुम्हीं में से हैं[144] और रिश्ते वाले

بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۷۵

एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक हैं **अल्लाह** की किताब में[145] बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता है

ایاتها ۱۲۹ | ۹ سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ ۱۱۳ | رکوعاتها ۱۶

सूरए तौबह मदनिय्या है इस में एक सो उन्तीस आयतें और सोलह रुकूअ़ हैं[1]

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖۤ اِلَى الَّذِیْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۱ؕ

बेज़ारी का हुक्म सुनाना है **अल्लाह** और उस के रसूल की त़रफ़ से उन मुश्रिकों को जिन से तुम्हारा मुआ़हदा था और वोह क़ाइम न रहे[2]

فَسِیْحُوْا فِی الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ غَیْرُ مُعْجِزِی

तो चार महीने ज़मीन पर चलो फिरो और जान रखो कि तुम **अल्लाह** को थका नहीं

144 : और तुम्हारे ही हुक्म में हैं ऐ मुहाजिरीन व अन्सार। **मुहाजिरीन के कई त़बक़े हैं :** एक वोह हैं जिन्हों ने पहली मरतबा मदीनए त़य्यिबा को हिजरत की उन्हें मुहाजिरीने अव्वलीन कहते हैं। कुछ वोह ह़ज़रात हैं जिन्हों ने पहले ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की, फिर मदीनए त़य्यिबा उन्हें अस्ह़ाबुल हिज्रतैन कहते हैं। बा'ज़ ह़ज़रात वोह हैं जिन्हों ने सुल्ह़े हुदैबिया के बा'द फ़त्ह़े मक्का से क़ब्ल हिजरत की येह अस्ह़ाबे हिजरते सानिया कहलाते हैं। पहली आयत में मुहाजिरीने अव्वलीन का ज़िक्र है और इस आयत में अस्ह़ाबे हिजरते सानिया का। **145 :** इस आयत से तवारुस बिल हिजरत (हिजरत की वज्ह से जो विरासत में हिस्सा मिलता था) मन्सूख़ किया गया और ज़विल अरह़ाम (रिश्ते वालों) की विरासत साबित हुई। **1 :** सूरए तौबह मदनिय्या है मगर इस के अख़ीर की आयतें ''لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ'' से अख़ीर तक इन को बा'ज़ उ़लमा मक्की कहते हैं। इस सूरत में सोलह 16 रुकूअ़ एक सो उन्तीस 129 आयतें चार हज़ार अठत्तर 4078 कलिमे दस हज़ार चार सो अठासी 10488 ह़र्फ़ हैं। इस सूरत के दस नाम हैं उन में से तौबह और बराअत दो नाम मश्हूर हैं। इस सूरत के अव्वल में ''بِسْمِ اللّٰه'' नहीं लिखी गई इस की अस्ल वज्ह येह है कि जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام इस सूरत के साथ ''بِسْمِ اللّٰه'' ले कर नाज़िल ही नहीं हुए थे और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ''بِسْمِ اللّٰه'' लिखने का हुक्म नहीं फ़रमाया। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा से मरवी है कि ''بِسْمِ اللّٰه'' अमान है और येह सूरत तलवार के साथ अम्न उठा देने के लिये नाज़िल हुई। बुख़ारी ने ह़ज़रते बराअ से रिवायत किया कि कुरआने करीम की सूरतों में सब से आख़िर येही सूरत नाज़िल हुई। **2 :** मुश्रिकीने अ़रब और मुसल्मानों के दरमियान अ़ह्द था, उन में से चन्द के सिवा सब ने अ़ह्द शिकनी की तो उन अ़ह्द शिकनों का अ़ह्द साक़ित़ कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि चार महीने वोह अम्न के साथ जहां चाहें गुज़ारें उन से कोई तअ़र्रुज़ न किया जाएगा, इस अ़र्से में उन्हें मौक़अ़ है कि ख़ूब सोच समझ लें कि उन के लिये क्या बेहतर है और अपनी एह़तियातें कर लें और जान लें कि इस मुद्दत के बा'द इस्लाम मन्ज़ूर करना होगा या क़त्ल। येह सूरत 9 सि. हिजरी में फ़त्ह़े मक्का से एक साल बा'द नाज़िल हुई, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस सनह में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को अमीरे ह़ज मुक़र्रर फ़रमाया था और इन के बा'द अ़लिय्ये मुर्तज़ा को मज्मए हुज्जाज में येह सूरत सुनाने के लिये भेजा। चुनान्चे ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा ने दस ज़िल ह़िज्जा को जम्रए अ़क़बा के पास खड़े हो कर निदा की ''يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ'' मैं तुम्हारी त़रफ़ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़िरिस्तादा (भेजा हुवा) आया हूं। लोगों ने कहा : आप क्या पयाम लाए हैं ? तो आप ने तीस या चालीस आयतें इस सूरते मुबारका की तिलावत फ़रमाईं, फिर फ़रमाया मैं चार हुक्म लाया हूं : (1) इस साल के बा'द कोई मुश्रिक का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पास न आए। (2) कोई शख़्स बरह्ना हो कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ न करे। (3) जन्नत में मोमिन के सिवा कोई दाख़िल न होगा। (4) जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़ह्द है वोह अ़ह्द अपनी मुद्दत तक रहेगा और जिस की मुद्दत मुअ़य्यन नहीं है उस की मीआ़द चार माह पर तमाम हो जाएगी। मुश्रिकीन ने येह सुन कर कहा कि ऐ अ़ली ! अपने चचा के फ़रज़न्द (या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को ख़बर दे दीजिये कि हम ने अ़ह्द पसे पुश्त फेंक दिया हमारे उन के दरमियान कोई अ़ह्द नहीं है बजुज़ नेज़ा बाज़ी और तैग़ ज़नी के। इस वाक़िए में ख़िलाफ़ते ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर की त़रफ़ एक लत़ीफ़ इशारा है कि हुज़ूर ने ह़ज़रते अबू बक्र को तो अमीरे ह़ज बनाया और ह़ज़रते अ़लिय्ये मुर्तज़ा को उन के पीछे सूरए बराअत पढ़ने के लिये भेजा तो ह़ज़रते अबू बक्र इमाम हुए और